

आहमियात जकात

मुरत्तिबः
मुहम्मद अब्दुल रशीद कादरी

शाय कर्दा:

मुअस्ससा
मिरातुद्दावतिल
इस्लामिया

गुलडिया सकौला, पीलीभीत
शरीफ, यू.पी. 9719703910

Bilal Shaikh

जीलानी बुक डिपो

1229, तूडीवालान, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

ज़कात अदा न करने वाले के सदकाते
नाफ़िला के ना मकबूल होने से मुताल्लिक
नादिर व नायाब तहकीके हकीक

बनामे तारीख़ी

अइज़्जुल इक्तिनाहि फ़ी रद्दे स-द-क़तिन मानिइज़्ज़काह

1309 हिजरी

बनामे जदीद

अहमियत-ए-ज़कात

तसनीफ़ :

आकाये मन फ़ख़रे ज़मीनो ज़मन, आला हज़रत

अज़ीमुल बरकत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

इमाम अहमद रज़ा ख़ान कादरी

मुहद्दिसे बरेलवी अलैहिर्रहमतु वरिज़वान

तलख़ीस व तसहील

मुहम्मद अब्दुरशीद कादरी पीलीभीती

मोबाइल 9719703910

—: शायक़र्दा :-

मुअस्ससह मिरअतुद्दावतिल इस्लामिया

पीलीभीत शरीफ़ (यू.पी.)

अरकाने इस्लाम

करेईने कराम! इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर रखी गयी है। (1) इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। (2) नमाज़ कायम करना (3) ज़कात देना (4) रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखना (5) बैतुल्लाह शरीफ़ का हज करना। (बुख़ारी शरीफ़) यह एक खुली और नाकाबिले इनकार हकीकत है कि बग़ैर बुनियाद मज़बूत हुये कोई शै मज़बूत और पुख़्ता नहीं हो सकती। इस लिये एक मुसलमान को अपना ईमान व इस्लाम मज़बूत व मुस्तहक़म बनाने के लिये अरकाने मज़कूरा को अपनाना और उन पर अमलपैरा होना ज़रूरी है। बग़ैर इन को अपनाये अपने आप को कामिल मुसलमान तसव्वुर करना ख़ाम ख़याली और निरी नादानी है। लेहाज़ा हर मुसलमान आक़िल व बालिग़ पर पंजवक्ता, नमाज़ों की पाबन्दी, मालिके निसाब पर ज़कात, काशतकारों पर उश्र भी लाज़िम है। रमज़ान शरीफ़ के रोज़े और वुसअत रखता हो तो हज करना भी फ़र्ज़ है। इन की अदायगी के बग़ैर नज़र व नियाज़, ख़ल्ता व अकीका की देगे चढ़ाना या दीगर उमूरे ख़ैर में पैसा सर्फ़ करना बे फ़ायदा और अक्ल से दुश्मनी बरतने के मुतारादिफ़ है। हाँ अरकाने इस्लाम की अदायगी के बाद मज़कूरा व दीगर उमूरे मुस्तहिब्बा का अपनाना निहायत कार-आमद और मुस्तहसिन काम है। ज़ेरे नज़र रिसाला में सय्यिदिना आला हज़रत रदियल्लाहु अन्हु ने कुरआन व हदीस (किताब व सुन्नत) की रौशनी में ज़कात की अहमियत बयान फ़रमाते हुये उन लोगों को ख़बरदार और बेदार किया है कि जो फ़राइज़ व वाजिबात की रिआयत और ममनूआत से इज्तेनाब किये बग़ैर उमूरे ख़ैर में मुनहमिक व मसरूफ़ रहते हैं। सच तो यह है कि अरकाने इस्लाम से गाफ़िल हो कर कारहाये मुस्तहिब्बह में दौलत लुटाने वालों की आँखें खोलने के लिये यह रिसाला काफ़ी है। मगर,

आँख वाला तेरे जोबन का नज़ारा देखे
दीदये कोर को क्या आये नज़र क्या देखे

—फ़कीर मोहम्मद अब्दुरशोद कादरी पीलीभीत

विरिमल्लाहिरहमानिरहीम

मसला नं० 72 मुरसिला अब्दुर्रज़्ज़ाक खा, पीलीभीत ज़ीकादतुल हयाम
1309 हिजरी

क्या फ़रमाते हैं उलामाये दीन व मुफ़्तियाने शरअ मतीन इस मसाले में कि एक शख्स अपने रूपये की ज़कात तो नहीं देता है मगर रूपये मसरफ़े ख़ैर में सर्फ़ करता है यानि हर रोज़ फुक़रा को ज़रे नक़द व ग़ल्ला तक़सीम करता है और एक मस्जिद बनवाई है और एक गांव उस रूपये से ख़रीद कर वास्ते ख़ैरात के हिबा कर दिया है और ता-हयात खुद ज़रे तौफ़ीर (माले कसीर) इसका सर्फ़ करता रहे मसरफ़े ख़ैर में। अब एक और शख्स यह कहता है कि जिस रूपये की ज़कात नहीं दी गई है उस रूपये से किसी किस्म की ख़ैरात जाइज़ नहीं है। हर रोज़, की ख़ैरात और बनवाना मस्जिद का और गांव का हिबा करना सब अकारत है। लेहाज़ा फ़तवा तलब किया जाता है कि जिस रूपये की ज़कात नहीं दी गयी है उस रूपये को मसरफ़े ख़ैर में सर्फ़ करना जैसा कि बाला मज़कूर है, दुरुस्त है या नहीं। और अगर दुरुस्त नहीं है तो इस मौज़े को हिबा से वापस लेकर दोबारा इस कस्द से हिबा करे कि इस मौज़े की तौफ़ीर हो जो हर साल वसूल हुआ करेगी बिल-एवज़ इस ज़रे ज़कात (माले ज़कात) जो इसके ज़िम्मे ज़मानये माज़ियह (गुज़रा हुआ ज़माना) की देन है, सर्फ़ हुआ करें। अल्मुकल्लिफ़-अब्दुल रज़्ज़ाक खाँ वल्द नत्थू खाँ खन्डसारी साकिन मोहल्ला अशरफ़ खाँ पीलीभीत शरीफ़

बिमिल्लाहिरहमानिरहीम

नह्यदुहू वनुसल्ली अला रसूलेहिल करीम

अल्जवाब

ज़कात आज़म फ़र्ज़ दीन और अहम अरकाने इस्लाम से है। वलेहाज़ा कुरआने अज़ीम में बत्तीस जगह नमाज़ के साथ इस का ज़िक्र फ़रमाया और तरह तरह से बन्दों को इस फ़र्ज़ अहम की तरफ़ बुलाया,

साफ़ फ़रमा दिया कि जुन्हार (ख़बरवार) न समझना कि ज़कात बी तो माल में से इतना कम हो गया, बल्कि इससे माल बढ़ता है।

तर्जुमा:-

अल्लाह हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को (अल्कुरआन 276/2) बाज़ दरख़्तों में कुछ अज्ज़ाये फ़ासिदा इस किस्म के पैदा हो जाते हैं कि पेड़ की उत्थान को रोक देते हैं। अहमक नादान उन्हें न तराशेगा कि मेरे पेड़ से इतना कम हो जायेगा। पर आकिल होशमन्द तो जानता है कि इन के छांटने से यह नौनिहाल लहलहा कर दरख़्त बनेगा वरना यूँ ही मुरझा कर रह जायेगा, यही हिसाब ज़काती माल का है।

(1) हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं:-

ज़कात का माल जिसमें मिला होगा उसे तबाह व बरबाद कर देगा।

(शुएबुल ईमान लिल बैहकी 273/3)

(2) दूसरी हदीस: में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं:-

ख़ुशकी व तरी में जो माल तल्फ़ हुआ है वह ज़कात न देने ही से तल्फ़ हुआ है। (मजमउज़्ज़वाइद व-हवाला मुअज्जमुल औसत 63/3)

(3) तीसरी हदीस: में हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं:-

जिसने अपने माल की ज़कात अदा कर दी बेशक अल्लाह तआला ने उस माल का शर उससे दूर कर दिया।

(सहीह इब्ने ख़ज़ीमा 13/4)

(4) चौथी हदीस: में हुज़ूर आला सलावातुल्लाहि व सलामहू अलैह फ़रमाते हैं:-

अपने मालों को मज़बूत क़िलों में कर लो, ज़कात देकर और अपने बीमारों का इलाज करो, ख़ैरात से। (किताबुल मरासील सफ़हा 62)

ऐ अजीज़! एक बेअक्ल गँवार को देख कि तुझमें गन्दुम अगर पास नहीं होता ब—हज़ार दिक्कत कर्ज़ दाम से हासिल करता और उसे ज़मीन में डाल देता है, उस वक्त तो वह अपने हाथों से खाक में मिला दिया मगर उम्मीद लगी है कि खुदा चाहे तो यह खोना बहुत कुछ पाना हो जायेगा। तुझे इस गँवार के बराबर भी अक्ल नहीं। या जिस क़दर ज़ाहिरी असबाब पर भरोसा है अपने मालिक जल्ला व अला के इरशाद पर इतना इतमीनान भी नहीं कि अपना माल बढ़ाने और एक—एक दाना एक—एक पेड़ बनाने को ज़कात का बीज नहीं डालता। वह फ़रमाता है ज़कात दो तुम्हारा माल बढ़ेगा। अगर दिल में इस फ़रमान पर यकीन नहीं, जब तो खुला कुफ़्र है वरना तुझसे बढ़कर अहमक कौन कि अपने यकीनी नफ़ा—ए—दीन व दुनिया की ऐसी भारी तिजारत छोड़ कर दोनों ज़हानों का ज़ियान (नुकसान) मोल लेता है।

(1) हदीस में है हुज़ूर सलल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं:—

तुम्हारे इस्लाम का पूरा होना यह है कि अपने मालों की ज़कात अदा करो। (कशफुल इस्तार ज़वाइदिल बज़ार 1/416)

(2) हुज़ूर सललल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं:—

जो अल्लाह और अल्लाह के रसूल पर ईमान लाता हो, उसे लाज़िम है कि अपने माल की ज़कात अदा करे। (अल्मुअज़्ज़मुल कबीर 12/424)

(3) हदीस:— हुज़ूर पुरनूर सललल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं:—

जिसके पास सोना या चाँदी हो और उस की ज़कात न दे, क़यामत के दिन उस ज़र व सीम (सोना—चाँदी) की तख़्तियाँ बनाकर जहन्नम की आग में तपायेंगे फिर उन से उस शख्स की पेशानी और करवट और पीठ पर दाग़ देंगे, जब वह तख़्तियाँ ठण्डी हो जायेंगी फिर उन्हें तपा कर दागेंगे, क़यामत के दिन जो पचास हज़ार बरस का है, यूँही करते रहेंगे, यहाँ तक कि तमाम मख़्लूक का हिसाब हो चुके। (सहीह मुस्लिम 318/1)

मौला तआला फरमाता है:-

तर्जुमा:- और जो लोग जोड़ते हैं, सोना चाँदी और उसे खुदा की राह में नहीं उठाते यानि ज़कात अदा नहीं करते, उन्हें विशारत दे दुख की मार की जिस दिन तपाया जायेगा वह सोना चाँदी जहन्नम की आग से, पस दागी जायेंगी उस से उनकी पेशानियाँ और करवटें और पीटें, यह है जो तुम ने अपने लिये जोड़कर रखा था अब चख्रों मज़ा उस जोड़ने का। (अल्कुरआन 9/34) फिर इस दाग़ देने को भी न समझिये कि कोई चहका लगा दिया जायेगा या पैशानी व पुश्त व पहलू की चरबी निकल कर बस होगी बल्कि इस का हाल भी हदीस से सुन लीजिये:-

(4) हदीस सय्यदना अबूज़र रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया:- उनके सर, पिस्तान पर वह जहन्नम का गर्म पत्थर रखेंगे कि सीना तोड़कर शाने से निकल जायेगा, और शाने की हड्डी पर रखेंगे कि हड्डियाँ तोड़ता सीने से निकलेगा (सहीह बुख़ारी 1/189) और फरमाया मैंने हुज़ूर नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना कि पीठ तोड़ कर करवट से निकलेगा और गुद्दी तोड़कर पेशानी से। (सहीह मुस्लिम 1/321)

और इसके साथ और भी एक कैफ़ियत सुन रखिये:-

(5) हदीस: हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया:- कोई रूपया दूसरे रूपये पर ना रखा जाये न कोई अशर्फी दूसरी अशर्फी से छू जायेगी बल्कि ज़कात देने वाले का जिस्म इतना बढ़ा दिया जायेगा कि लाखों करोड़ों जोड़े हो तो हर रूपया जुदा दाग़ देगा।

(मजमउज़्ज़वाइद व-हवाला अलमुअज्जमुल कबीर 3/65)

ऐ अज़ीज़! क्या खुदा और रसूल के फरमान को यूँही हँसी ठट्ठा समझता है या पचास हजार बरस की मुद्दत में यह जाँकाह मुसीबतें झेलनी सहल जानता है। ज़रा यहीं की आग में एक आध रूपया गर्म कर

के बदन पर रख कर देख, फिर कहाँ यह ख़फ़ीफ़ गर्मी कहाँ वह क़हरे आग, कहाँ यह एक ही रुपया कहाँ वह सारी उम्र का जोड़ा हुआ माल, कहाँ यह मिनट भर की देर कहाँ वह हजार दिन बरस की आफ़त, कहाँ यह हल्का सा चहका कहाँ वह हड्डियाँ तोड़कर पार होने वाला ग़ज़ब। अल्लाह तआला मुसलमान को हिदायत बख़्शे, आमीन!

(6) हदीस: मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़रमाते हैं:—

जो शख़्स अपने माल की ज़कात न देगा वह माल रोज़े क़यामत गंजे अज़्दहे की शक़ल बनेगा और उस के गले में तौक़ होकर पड़ेगा। फिर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किताबुल्लाह से इस की तसदीक़ पढ़ी कि रब अज़्ज़ वजल फ़रमाता है:—

जिस चीज़ में बुख़ल कर रहे हैं क़रीब है कि तौक़ बनाकर इनके गले में डाली जाये क़यामत के दिन। (अल्कुरआन 180/3 सुननुन निसाई 272/1)

(7) हदीस: फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम:—

वह अज़्दहा मुहँ खोलकर उस के पीछे दौड़ेगा, यह भागेगा, उससे फ़रमाया जायेगा। ले अपना वह ख़ज़ाना कि छुपा कर रखा था कि मैं इससे ग़नी हूँ। जब देखेगा कि इस अज़्दहा से कहीं मफ़र (भागने की जगह) नहीं, नाचार अपना हाथ उस के मुँह में दे देगा, वह ऐसा चबायेगा जैसे नर ऊँट चबाता है। (सहीह मुस्लिम 321/1)

(8) हदीस: फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम:—

जब वह अज़्दहा उस पर दौड़ेगा यह पूछेगा तू कौन है? कहेगा मैं तेरा वह बे ज़काती माल हूँ जो छोड़ मरा था, जब यह देखेगा कि वह पीछा किये ही जा रहा है, हाथ उसके मुँह में दे देगा। वह चबायेगा, फिर उसका सारा बदन चबा डालेगा। (कशफ़ुल अस्तार अन ज़वाइदुल बज़ार 418/1)

(9) हदीस: फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम:—

वह अज़्दहा उसका मुँह अपने फन में ले कर कहेगा मैं तेरा माल हूँ, मैं

तेरा खज़ाना हूँ। (सहीहुल बुख़ारी 1/188)

(10) हदीस: फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम:—

फ़कीर हरगिज़ नंगे भूके होने की तकलीफ़ न उठायेंगे मगर अग़निया (दौलतमदों) के हाथों सुन लो ऐसे तवग़रो (मालदारों) से अल्लाह तआला सख़्त हिसाब लेगा और उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा। (मजमउल ज़वायद बहावाला मुअज्जम औसत 3/62)

(11) हदीस: अब्दुल्ला बिन मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं, ज़कात न देने वाला मलऊन है, जुबाने पाक मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर (सहीह इब्ने खुज़ैमा 4/9)

(12) हदीस: मौला अली करमल्लाहु तआला वज़्हो फ़रमाते हैं, रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूद खाने वाले और खिलाने वाले और इस पर गवाही करने वाले और इसका काग़ज़ लिखने वाले, ज़कात न देने वाले, इन सब को क़यामत के दिन मलऊन बताया। (कन्ज़ुल आमाल बहवाला हुब्बे अन अली 4/109)

(13) हदीस: कि फ़रमाते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम:—

क़यामत के दिन मालदारों के लिये मुहताजों के हाथ से ख़राबी है। मुहताज अज़्र करेंगे ऐ रब हमारे! इन्होंने हमारे वह हुकूक़ जो तूने हमारे लिये इन पर फ़र्ज़ किये थे, जुल्मन न दिये। अल्लाह अज़्ज़ा वजल फ़रमायेगा, मुझे क़सम है अपने इज़्ज़तो जलाल की कि तुम्हें अपना कुर्ब अता करूँगा और इन्हें दूर रखूँगा। (मजमउल ज़वायद बहावाला मुअज्जम औसत 62/3)

(14) हदीस: कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ लोग देखे जिन के आगे पीछे ग़र्की लंगोटियों की तरह कुछ चीथड़े थे और जहन्नम की गर्म आग पत्थर थोहर और सख़्त कड़वी जलती बदबूदार घास चौपाओं की तरह चरते फिरते थे। जिबरईले अमीन अलैहिस्सलातो

वस्सलाम से पूछा यह कौन लोग हैं? अर्ज की यह ज़कात न देने वाले हैं और अल्लाह तआला ने इन पर जुल्म नहीं किया, अल्लाह तआला बन्दों पर जुल्म नहीं फ़रमाता। (क़शफ़ुल अस्तार अ़न ज़वाइदिल वज़ार 38/1)

(15) हदीस: दो औरतें खिदमते वाला में सोने के कगन पहने हाज़िर हुईं हज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, इन की ज़कात दोगी? अर्ज की-न। फ़रमाया क्या चाहती हो कि अल्लाह तआला तुम्हें आग के कगन पहनाये? अर्ज की-न। फ़रमाया-ज़कात दो। (जामेअ अलतिरमिज़ी 81/1)

(16) हदीस: एक बीवी चाँदी के छल्ले पहने थी, फ़रमाया:-इनकी ज़कात दोगी? उन्होंने कुछ इन्कार सा किया। फ़रमाया-तो यही तुझे जहन्नम में ले जाने के लिये बहुत हैं। (सुनन अबू दाऊद 1/218)

(17) हदीस: कि हज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:- ज़कात न देने वाला क़यामत के दिन दोज़ख़ में होगा

(मजमउल ज़वायद बहवाला अल्मुअज्जमुल सगीर 64/3)

(18) हदीस: फ़रमाते हैं रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम:-दोज़ख़ में सबसे पहले तीन शख्स जायेंगे। इनमें से एक वह तवंगर (दौलतमंद) कि अपने माल में अल्लाह अज़्ज़ा वजल का हक़ अदा नहीं करता।

(सहीह इब्ने ख़ज़ीना 8/4)

ग़र्ज ज़कात न देने की जाँकाह आफ़तें वह नहीं जिन की ताब आ सके, न देने वाले को हज़ार साल इन सख़्त अज़ाबों में गिरफ़्तारी की उम्मीद रखना चाहिये कि ज़ईफ़ुल बुनियान (जिसकी बुनियाद कमज़ोर हो) इन्सान की क्या जान, अगर पहाड़ों पर डाली जायें सुर्मा होकर खाक में मिल जायें, फिर इस से बढ़कर अहमक़ कौन कि अपना माल झूटे सच्चे नाम की ख़ैरात में सर्फ़ करे और अल्लाह अज़्ज़ा वजल का फ़र्ज और इस बादशाहे क़ह्हार का वह भारी क़र्ज गर्दन पर रहने दे। शैतान

का बड़ा धोका है कि आदमी को नेकी के परदे में हलाक करता है। नादान समझता ही नहीं, नेक काम कर रहा हूँ और न जाना कि नफ़िल बे फ़र्ज निरे धोके की टट्टी है। इसके कबूल की उम्मीद तो मफ़कूद और इसके तर्क का अज़ाब गर्दन पर मौजूद।

ऐ अज़ीज़! फ़र्ज खास सलातनी क़र्ज है और नफ़िल गोया तोहफ़ा व नज़राना। क़र्ज न दीजिये और बलाई बेकार तोहफ़े भेजिये, वह काबिले कुबूल होंगे खुसूसन उस शहन्शाहे ग़नी की बारगाह में जो तमाम जहान व जहानियाँ से बे नियाज़ है? यूँ यकीन न आये तो दुनिया के झूठे हाकिमों ही को आज़मा ले। कोई ज़मींदार मालगुज़ारी तो बन्द कर ले और तोहफ़े में डालियाँ भेजा करे, देखो तो सरकारी मुजरिम ठहरता है या उस की डालियाँ कुछ बहबूद का फल लाती हैं। ज़रा आदमी अपने ही गिरेबान में मुह डाले। फ़र्ज कीजिये आसामियों से किसी खण्डसारी का रस बंधा हुआ है जब देने का वक़्त आये तो हरगिज़ वह रस न दें, मगर तोहफ़े में आम, ख़रबूज़े भेजें, क्या यह शख़्स इन आसामियों से राज़ी होगा? या ओते हुये उसकी नादेहन्दगी पर जो आज़ार उन्हें पहुँचा सकता है इन आम, ख़रबूज़े के बदले उससे बाज़ आयेगा? सुब्हान अल्लाह! जब एक खण्डसारी के मुतालबे का यह हाल है तो मलिकुल मुलूक अहकमुल हाकिमीन जल्ला व अला के क़र्ज का क्या पूछना! लाजुर्म मोहम्मद बिन अल्मुबारक बिन अल्सबाह अपने जुज़ये इमला और उस्मान बिन अबी शैबा अपनी सुनन और अबू नईम हल्यतुल औलिया और हन्ना फ़वायद और इब्ने जरीर तहज़ीबुल आसार में अब्दुर्रहमान बिन साबित व ज़ैद व जुबैद पिसराने हारिस व मुजाहिद से राबी:-

जब ख़लीफ़ये रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सय्यदना सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहु तआला अन्हु के नज़अ का वक़्त हुआ, अमीरुल मोमिनीन फ़ारुके आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु को बुलाकर फ़रमाया:-

ऐ उमर! अल्लाह से डरना और जान लो कि अल्लाह कुछ काम

दिन में हैं कि उन्हें रात में करो तो कबूल न फरमायेगा और कुछ काम रात में कि उन्हें दिन में करो तो मकबूल न होंगे, और खबरदार हो कि कोई नफिल कुबूल नहीं होता जब तक फर्ज अदा न कर लिया जाये।
अल-हदीस (अल्मुसनीद वल्मुरासील मिनल जामेअल कबीर 13/53)

(इसे अल्लामा इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह अल्यमनी अल्मदनी अश्शाफई ने अलकौलुल सुवाब फी फज़ले उमर बिन अल्खत्ताब के बाब 13 में और किताबुत्तहकीक़ फी फज़ले सिद्दीक़ के बाब 19 में ज़िक्र किया है। यह पहली किताब है जो उन्होंने खुद लिखी है जिसका नाम "अल्इकतिफ़ा फी फज़लुल अरबिअतुल खुल्फ़ा" है। इसे इमाम जलील जलालुद्दीन सयूती रहमतुल्लाह तआला अलैह ने जामे अल्कबीर में अब्दुर्रहमान बिन साबित और ज़ैद व जुबैद बिन अल्हारिस और मुजाहिद से रिवायत किया कि जब नज़अ का वक़्त आया.....अलख़)

हुज़ूर पुरनूर सय्यदना ग़ौसे आज़म मौलाये अकरम हज़रत शैख़ मुहिय्युल मिल्लत वद्दीन अबू मुहम्मद अब्दुल कादिर जीलानी रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी किताबे मुस्तताब "फ़तूहुल ग़ैब शरीफ़" में क्या-क्या जिगर शिगाफ़ मिसालें ऐसे शख्स के लिये इरशाद फ़रमाई हैं जो फ़र्ज छोड़कर नफ़िल बजा लाये। फ़रमाते हैं, इसकी कहावत ऐसी है जैसे किसी शख्स को बादशाह अपनी ख़िदमत के लिये बुलाये, यह वहाँ तो हाज़िर न हुआ और उस गुलाम की ख़िदमतगारी में मौजूद है। फिर हज़रत अमीरुल मोमिनीन मौला अल्मुस्लिमीन सय्यदना मौला अलीये मुर्तुज़ा करमुल्लाहु तआला वज्ह से इस की मिसाल नक़ल फ़रमाई कि जनाब इरशाद फ़रमाते हैं:— ऐसे शख्स का हाल उस औरत की तरह है जिसे हमल रहा, जब बच्चा होने के दिन करीब आये इस्कात हो गया। अब वह न हामिला है न बच्चे वाली। यानि जब पूरे दिनों पर अगर इस्कात हो तो मेहनत तो पूरी उठाई नतीजा खाक नहीं कि अगर बच्चा

होता तो समरा खुद मौजूद था, हमल बाकी रहता तो आगे उम्मीद लगी थी, अब न हमल न बच्चा, न उम्मीद न समरा और तकलीफ वही झेली जो बच्चा वाली को होती है। ऐसे ही इस नफ़िल ख़ैरात देने वाले के पास से रूपया तो उठा मगर जबकि फ़र्ज़ छोड़ा यह नफ़ल भी कबूल न हुआ तो ख़र्च का ख़र्च हुआ और हासिल कुछ नहीं। इसी किताब मुबारक में हुज़ूर मौला रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया:—

यानि फ़र्ज़ छोड़कर सुन्नत व नफ़िल में मशगूल होगा, यह कबूल न होंगे और ख़्वार किया जायेगा। (फ़तूहुल ग़ैब मय शरह अब्दुल हक़ देहलवी सफ़हा 273)

यूँ ही शैख़े मुहक्किक् मौलाना अब्दुल हक़ मुहदिदस देहलवी कुदिदसा सिरहू ने इस की शरह में फ़रमाया कि:—

लाजिम और ज़रूरी चीज़ का तर्क और जो ज़रूरी नहीं उस का अहतमाम, अक्ल व ख़िरद में फ़ायदे से दूर है क्योंकि आक़िल के हाँ हुसूले नफ़अ से दफ़ये ज़रर अहम है बल्के इस सूरत में नफ़ा मुन्तफ़ी (फ़ना होने वाला) है। (हवाला मज़कूर) हज़रत शैख़ुश्शूख़ इमाम शहाबुल मिल्लते वद्दीन सोहरवर्दी कुदिदसा सिरहुल अज़ीज़ अवारिफ़ शरीफ़ के बाब अल्सामिन वल-सुलसैन में हज़रत ख़वास रदियल्लाहु तआला अन्हु से नक़ल फ़रमाते हैं:— हमें ख़बर पहुची कि अल्लाह अज़्ज़ा वजल कोई नफ़िल कबूल नहीं फ़रमाता यहाँ तक कि फ़र्ज़ अदा किया जाये, अल्लाह तआला ऐसे लोगों से फ़रमाता है कहावत तुम्हारी बदबन्दे की मानिन्द है क़र्ज़ अदा करने से पहले तोहफ़ा पेश करे। (अवारिफ़ुल मआरिफ़ मुलहिक़ बा अह्याउल उलूम सफ़हा 168)

खुद हदीस में है, हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:— चार चीज़े अल्लाह ने इस्लाम में फ़र्ज़ की हैं, जो इनमें से तीन अदा करे वह उसको कुछ काम न दें जब तक पूरी चारों न बजा

लाये, नमाज़, ज़कात, रोज़ाये रमज़ान, हज्जे कअबा। (मस्नदे अहमद बिन हम्बल 4/201)

साथिदिना अब्दुला बिन मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं। हमें हुक्म दिया गया कि नमाज़ पढ़ें और ज़कात दें, और जो ज़कात न दे उस की नमाज़ कबूल नहीं। (गजमतज़ावाइद बहवाला अल्मुअज्जमुल कबीर 3/62)

सुब्हान अल्लाह! जब ज़कात न देने वाले की नमाज़, रोज़े, हज मकबूल नहीं तो उस नफ़िल ख़ैरात नाम की कायनात से क्या उम्मीद है बल्के उन्हीं से अरबहानी की रिवायत में आया कि फ़रमाते हैं:—“जो नमाज़ अदा करे और ज़कात न दे तो वह मुसलमान (कामिल) नहीं कि उसे उसका अमल काम आये।” (अतरगीब व तरहीब हवाला असुब्हानी 540)

इलाही मुसलमान को हिदायत फ़रमा, आमीन!

बिल्जुमला उस शख्स ने आज तक जिस क़दर ख़ैरात की, मरिजद बनाई, गाँव वक्फ़ किया, यह सब उमूर सहीह व लाज़िम तो हो गये कि अब न दी हुयी ख़ैरात फ़कीर से वापस कर सकता है न किये हुये वक्फ़ को फेर लेने का इख़्तियार रखता है, न उस गाँव की तौफीर (आमदनी) अदाये ज़कात, ख़्वाह अपने और किसी काम में सर्फ़ कर सकता है कि वक्फ़ बाद तमागी लाज़िम व हतमी हो जाता है जिस के अबताल (ग़लत करार देने) का हरगिज़ इख़्तियार नहीं रहता।

दुर्रें मुख़्तार में है कि वक्फ़ साहिबीन के नज़दीक अल्लाह तआला की मिलिक्यत में चले जाने की वजह से लाज़िम हो जाता है लेहाज़ा इस का अबताल (बातिल करना) जाइज़ नहीं, और न ही उस का कोई वारिस हो सकता है, इसी पर फ़तवा है (दुर्रें मुख़्तार 1/377)

मगर बई हमा जब तक ज़कात पूरी-पूरी न अदा करे इन अफ़आल पर उम्मीदें सवाब व क़बूल नहीं कि किसी फ़ेल का सही हो जाना और बात है और इस पर सवाब मिलना मक़बूले बारगाह होना और

बात है। मसलन अगर कोई शख्स दिखावे के लिये नमाज़ पढ़े नमाज़ सही तो हो गयी फ़र्ज उतर गया, पर न क़बूल होगी न सवाब पायेगा, बल्के उल्टा गुनाहगार होगा, यही हाल उस शख्स का है। ऐ अज़ीज़! अब शैताने लईन कि इन्सान का उदूये मुबीन (खुला दुश्मन) है, बिल्कुल हलाक कर देने और यह ज़रा सा डोरा जो क़स्दे ख़ैरात का लगा रह गया है जिससे फुक़रा को तो नफ़ा है उसे भी काट देने के लिये यूँ फ़िकरे सुझायेगा कि जो ख़ैरात क़बूल नहीं तो करने से क्या फ़ायदा, चलो इसे भी दूर करो, और शैतान की पूरी बन्दगी बजा लाओ, मगर अल्लाह अज़्ज़ा वजल को तेरी भलाई और अज़ाबे शदीद से रिहाई मन्ज़ूर है, वह तेरे दिल में डालेगा कि इस हुक्म शरई का जवाब यह न था जो इस दुश्मने ईमान ने तुझे सिखाया और रहा सहा बिल्कुल ही मुतामरूद (नाफ़रमान) व सरकश बनाया बल्कि तुझे तो फ़िकर करनी थी जिस के बाइस अज़ाबे सुल्तानी से भी निजात मिलती और आज तक कि यह वक्फ़ व मस्जिद व ख़ैरात भी सब मक़बूल हो जाने की उम्मीद पड़ती, भला गौर करो वह बात बेहतर कि बिगड़ते हुये काम फिर बन जायें अकारत जाती मेहनतें अज़ सरे नौ समरह लायें या मआज़ अल्लाह यह बेहतर की रही सही नाम को जो सूरते बन्दगी बाकी है उसे भी सलाम कीजिये और खुले हुये सरकशों, इश्तहारी बागियों में नाम लिखा लीजिये, वह नेक तदबीर यही है कि ज़कात न देने से तौबह कीजिये, आज तक कि जितनी ज़कात गर्दन पर है फ़ौरन दिल की खुशी के साथ अपने रब का हुक्म मानने और उसे राज़ी करने को अदा कीजिये कि शहन्शाहे बे नियाज़ की बारगाह में बागी गुलामों की फ़ेहरिस्त से नाम कट कर फ़रमाँ बरदार बन्दों के दफ़्तर में चेहरा लिखा जाये, मेहरबान मौला जिस ने जान अता की, अअज़ा दिये, माल दिया, करोड़ों नेमतें बख़्शीं, उसके हुज़ूर मुँह उजाला होने की सूरत नज़र आये और मुज़्दह हो, बशारत हो, नवीद हो, तहनियत हो कि ऐसा करते ही अब तक जिस क़दर ख़ैरात

दी है, वक्फ़ किया है, मस्जिद बनाई है, उन सब की भी मकबूली की उम्मीद होगी कि जिस जुर्म के बाइस यह काबिल कुबूल न थे जब वह जायल हो गया उन्हें भी बिइज़निल्लाहि तआला शरफ़े कुबूल हासिल हो गया। चारये कार तो यह है आगे हर शख्स अपनी भलाई बुराई का इख़्तियार रखता है, मुद्दते दराज़ गुज़रने के बाइस अगर ज़कात का तहकीकी हिसाब न मालूम हो सके तो आकिबत पाक करने के लिये बड़ी से बड़ी रक़म जहाँ तक ख़याल में आ सके फ़र्ज़ कर ले कि ज़्यादा जायेगा तो ज़ाया न जायेगा बल्कि तेरे रब मेहरबान के पास तेरी बड़ी हाजत के वक़्त के लिये जमा रहेगा, वह इसका कामिल अज्र जो तेरे हौसले व गुमान से बाहर है अता फ़रमायेगा, और कम किया तो बादशाहे क़हहार का मुतालबा जैसा हज़ार रुयये का वैसा ही एक पैसे का। अगर बर्दी वजह कि माल कसीर और करनों (ज़माना दराज़) की ज़क है यह रक़मे वाफ़िर देते हुये नफ़्स को दर्द पहुँचेगा, तो अक्वल तो यह ही ख़याल कर लीजिये कि कुसूर अपना है। साल व साल देते रहते तो यह गठरी क्यों बन्ध जाती, फिर खुदाये करीम अज़्ज़ा वजल की मेहरबानी देखिये, उसने यह हुक्म न दिया कि ग़ैरों को ही दीजिये बल्के अपनों को देने में दूना सवाब रखा है, एक तसद्दुक़ का एक सिलये रहम का। तो जो अपने घर से प्यारे दिल के अज़ीज़ हों, जैसे भाई, भतीजे, भान्जे, उन्हें दे दीजिये कि उन का देना चन्दाँ नागवार न होगा, बस इतना लिहाज़ कर लीजिये के न वह ग़नी हो न ग़नी बाप ज़िन्दा के नाबालिग बच्चे, न उन से इलाक़ये ज़ौजियत या विलादत हो यानि न वह अपनी औलाद में न आप उनकी औलाद में। फिर रक़म अगर ऐसी ही फ़रावाँ है कि गोया हाथ बिल्कुल खाली हुआ जाता है तो दिये बग़ैर तो छुटकारा नहीं, खुदा के वह सख़्त अज़ाब हज़ारों बरस तक झेलने बहुत दुश्वार हैं, दुनिया की यह चन्द सांसे तो जैसे बनें गुज़र ही जायेंगी, ताहम अगर यह शख्स अपने इन अज़ीज़ों को ब नियते ज़कात देकर क़ब्ज़ा दिलाये

फिर वह तरस खाकर बगैर उस के जबर ब कराह (बिला मजबूर किये) के अपनी खुशी से बतौर हिबा जिस क़दर चाहें वापस कर दें तो सब के लिये सरासर फ़ायदा है, इस के लिये यह खुदा के अज़ाब से छूटा। अल्लाह तआला का क़र्ज़ व फ़र्ज़ अदा हुआ और माल भी हलाल व पाकीज़ा हो कर वापस मिला, जो रहा वह अपने जिगर पारों के पास रहा, उनके लिये यह फ़ायदे हैं कि दुनिया में माल मिला उक़्बा में अपने अज़ीज़ मुसलमान भाई पर तरस खाने और उसे हिबा करने और उसके अदाये ज़कात में मदद देने से सवाब पाया, फिर अगर इन पर पूरा इत्मीनान हो तो ज़कात सालहा-साल का हिसाब लगाने की भी हाजत न रहेगी। अपना कुल माल बतौर तसद्दुक़ उन्हें देकर क़ब्ज़ा दिला दे फिर वह जिस क़दर चाहें अपनी तरफ़ से हिबा कर दें। कितनी ही ज़कात उस पर थी सब अदा हो गयी। और सब मतलब बर आये और फ़रीक़ैन ने हर किस्म के दीनी व दुनयवी नफ़ा पाये, मौला अज़ज़ा वजल अपने करम से तौफ़ीक़ अता फ़रमायेफ़। आमीन आमीन या रब्बिल आलमीन।

(वल्लाहु तआला अअलमु व इल्मुहूअतम)

मुख़्तलिफ़ मौजूआत पर मुशतमिल मक़ालात व बयानात
और इरशादात-व फ़रमूदात का बेमिसाल तोहफ़ा बनाम

मक़ालात-ए-क़ादरी

मुरत्तिब: मुहम्मद अब्दुरशीद क़ादरी पीलीभीती

Ahmiyat-e Zakat

JILANI BOOK DEPOT

🏠 1229, CHURI WALAN, JAMA MASJID, DELHI-110006

☎ 011-23256577, +919212346577, 79824927755

✉ jilani.book.depot@gmail.com, jilanigraphic@gmail.com

f **JILANI BOOK DEPOT**



+91 9350046577, 9871209285



a_subhan9871

Rs

20/-